हिंदी भाषा की उपयोगिता और वर्चस्वी प्रसार

शोधार्थी : नीलम, शोध निर्देशक :डॉ. मधुबाला शर्मा.

हिंदी विभाग, सनराईज विश्वविद्यालय, अलवर (राज0)

// सार //

इस लेख में बदलते समय के साथ हिंदी भाषा के बढ़ते हुए स्वरूप और विभिन्न क्षेत्रों में इसकी बढ़ती हुई उपयोगिता और वर्चस्वी प्रसार के बारे में बताया गया है और यह बताया गया है कि दुनिया की श्रेष्ठ भाषाओं की तरह हिंदी अपने विशाल व्याकरण के साथ अपनी प्रचुर खूबियों को समेटे हुए विश्व के सामने मुखर हो रही है तथा सभी क्षेत्रों में अपनी उपयोगिता को समुचित रूप से सिद्ध कर रही है। इसके साथ साथ यह बताया गया है कि हिंदी भाषा अब केवल भारत तक ही सीमित नहीं है बल्कि यह विश्व की भाषा हो चुकी है और तकनीकी और उद्योगों के विकास के साथ-साथ हिंदी भाषा हर जगह अपनी आवश्यकता प्रस्तुत कर रही हैं और इसके पीछे का प्रमुख कारण के रूप में इस भाषा को बोलने वाले लोगों की इतनी बड़ी संख्या है जो इसकी उपयोगिता को प्रमाणिक रूप से प्रस्तुत करती है। चाहे वह इंटरनेट हो या बहुल जनसंख्या के बीच संचार का माध्यम हर एक प्रकार से हिंदी भाषा अपनी उपयोगिता और वर्चस्वी प्रसार को बखूबी सिद्ध कर रही है।

// भूमिका //

"हिंदी है हम वतन है हिंदोस्ता हमारा" इकबाल की यह पंक्ति हम हिंदी भाषियों को गर्व से भर देती है और इसके अर्थ को समझते ही मानसपटल में हर्ष का संचार हो जाता है और यह हर्ष तब दोगुना हो जाता है जब हम आज के समय में हिंदी भाषा की उपयोगिता के विस्तृत होते क्षेत्र को अपनी ज्ञानेंद्रियों

 Copyright © 2020Authors

से देखते सुनते और महसूस करते है। दुनियाभर में सत्तर करोण से अधिक लोगों द्वारा बोले जाने वाली "हिंदी" विश्व की तीसरी सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा है और हिंदी भाषी लोगों के इस संख्या विस्तार को देखते हुए हर क्षेत्र में हिंदी भाषा को सहर्ष अपनाया जा रहा है, चाहे वह इंटरनेट, वेबसाइट, संचार, फिल्म, विज्ञापन या मीडिया कोई भी क्षेत्र क्यों न हो इन सभी क्षेत्रों में हिंदी भाषा का वर्चस्व शुक्लपक्ष के चंद्रमा की तरह बढ़ता हुआ प्रत्यक्ष देखा जा सकता है। आज के इस परिवर्तनशील और विकसित समय में हिंदीभाषा की इसी वर्चस्वी प्रसार और उपयोगिता को हम इस निबंध में प्रभावी तरीके से समझेंगे।

"हिंदी"एकनजर-

विश्व में बोली जाने वाली लगभग 3000 भाषाओं में से हिंदी एक प्राचीन और श्रेष्ठ भाषा है जो देवनागरी लिपि में लिखी जाती है। इस भाषा का विकास संस्कृत भाषा से हुआ है जो पाली- प्राकृत -अपभ्रंश- अवहट्ट से होती हुई हिंदी के स्वरूप में प्रकटित हुई है। हिंदी को विश्व के सबसे बड़े प्रजातांत्रिक देश भारत की राजभाषा का गौरव प्राप्त है तथा यह संवैधानिक रूप से भारत की राजभाषा होनेकेसाथ-साथ भारत की सबसे अधिक बोली और समझी जाने वाली भाषा भी है।भारत के साथ-साथ फिजी, मॉरीशस, गयाना, सूरीनाम, नेपाल, पाकिस्तान और संयुक्तअरबअमीरात जैसे विश्व के प्रमुख देशों में भी हिंदी का प्रयोग प्रचुरमात्रा में किया जाता है। हिंदी को विश्व के प्रमुख वैज्ञानिक लिपियों में से एक देवनागरी लिपि में लिखा जाता है जिसे नागरी नाम से भी जाना जाता है। देवनागरी लिपि में 11स्वर, 33 व्यंजन है और अनुस्वार, अनुनासिक व विसर्ग भी विद्यमान है जिसे बायें से दाईं ओर लिखा जाता है। हिंदी शब्द की उत्पत्ति की बात करें तो 'हिंदी' शब्द संस्कृत के

Copyright © 2020Authors

ISSN 2454-2695
Vol 5 Issue 11 November 2019

सिंधु शब्द से उद्धृत माना जाता है। 'सिंधु' सिंध नदी को कहते थे और उसी आधार पर उसके आसपास की भूमि को सिंधु कहा जाने लगा तथा यह सिंधु शब्द ईरानी में जाकर 'हिंदू' हिंदी और फिर 'हिंद' हो गया। समय बीतता गया और ईरानी जैसे-जैसे भारत से परिचित होते गए वैसे वैसे इस शब्द के अर्थ में विस्तार होते गया और हिंद शब्द पूरे भारत का वाचक हो गया और इसी हिंद शब्द में ईरानी का ईक प्रत्यय लगने से (हिंद् + ईक) हिंदी क बना जिसका अर्थ है' हिंद का' अतः हिंदी का भी वास्तविक अर्थ है 'हिंद का' अर्थात भारतीय। हिंदी भाषा के देशीभाषा, आदिभाषा, हिंदवी, खड़ी बोली आदि स्वरूप प्रचलित है। हिंदी भाषा के मानकीकरण की बात करें तो स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से ही हिंदी और देवनागरी के मानकीकरण की दिशा में अन्यान्य क्षेत्रों में प्रयास होते रहे हैं जिनमें हिंदी व्याकरण का मानकीकरण, वर्तनी का मानकीकरण, यूनिकोड का विकास, शिक्षामंत्रालय के निर्देश पर केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा देवनागरी का मानकीकरणआदिप्रमुखहैं।भाषा शास्त्रियों के अनुसार हिंदी की चार प्रमुख शैलियाँ ऊंच्चहिंदी, दक्खिनी, रेख़्ता, औरउर्दूहैं। हिंदी भाषा की अनेक बोलियां यानी उपभाषाएं हैं जिनमें ब्रजभाषा और अवधी प्रमुख हैं। ये बोलियां हिंदी की विविधता है और इन बोलियों में कई प्रसिद्ध रचनाएं भी हुई हैं। ये बोलियां हिंदी की शक्ति है जो इसके जड़ों को और गहराई तक ले जाती हैं। हिन्दी की बोलियाँ और उन बोलियों की उपबोलियाँ हैं जो न केवल अपने में एक बड़ी परंपरा, इतिहास, सभ्यता को समेटे हुए हैं वरन स्वतंत्रता संग्राम, जनसंघर्ष, वर्तमान के बाजारवाद के खिलाफ भी उस का रचना संसार सचेत है। हिंदी भाषा के शब्दावली की बात करें तो इसमें प्रमुख रूप से दो वर्ग हैं प्रथम वर्ग तत्समवतद्भव का तथा द्वितीय वर्ग देशज और विदेशज का। तत्सम शब्द वे शब्द हैं जिनको संस्कृत भाषा से बिना कोई बदलाव कीए शब्दशः अपना

Copyright © 2020Authors

ISSN 2454-2695
Vol 5 Issue 11 November 2019

लिया गया है जैसे अग्नि, दुग्ध, दन्त, मुख इत्यादि परंतु यहां ये शब्द हिंदी भाषा में आने पर अपने विसर्गों से रहित हो जाते हैं जैसे 'नाम:' संस्कृत का शब्द हिंदी में आने पर केवल 'नाम' हो जाता है। तद्भव शब्द संस्कृत भाषा के वे शब्द है जिनमें थोड़ा परिवर्तन करके हिंदी में प्रयुक्त किया जाता है जैसे- आग, दूध, दांत, मुंह इत्यादि। द्वितीय वर्ग के देशज शब्द का अर्थ है जो देश में ही उपजा या बना हो यानी ऐसा शब्द जो न संस्कृत भाषा और न किसी अन्य भाषा का शब्द हो बल्कि ऐसा शब्द जिसे किसी प्रदेश या क्षेत्र के लोगों द्वारा बोलचाल में यूं ही बना लिया जाता है जैसे खटिया, लुटिया इत्यादि। विदेशज शब्द ऐसे शब्द हैं जिनको विदेशी भाषाओं से हिंदी भाषा में अपना लिया गया है जैसे रिक्शा, चाय इत्यादि। हिंदी भाषा के व्याकरण की बात करें तो अन्य भारतीय भाषाओं की तरह हिंदी में भी कर्ताकर्म क्रिया वाला वाक्य विन्यास है| हिंदी में दो लिंग पुलिंग और स्त्रीलिंग है तथा दो वचन एकवचन बहुवचन के क्रम से है। हिंदी भाषा के व्याकरण में क्रियावचन से भी प्रभावित होती है, विशेषण विशेष्य के पहले लगता है तथा ने, को, से, केलिए, का, की, के, में, पर, आदि कारक चिन्ह के प्रयोग के साथ हिंदी भाषा का व्याकरण विश्व के समृद्धि व्याकरण शास्त्रों में से एक है। इस प्रकार हिंदी अपने विभिन्न विविधताओं और समृद्धि पक्षों के साथ विश्व की श्रेष्ठ भाषाओं में शीर्षस्थ है।

हिंदी भाषा की उपयोगिता और प्रसार -

मुख से उच्चारित होने वाले शब्दों और वाक्यों आदि का वह समूह जिनके द्वारा मन की बात बताई जाती है भाषा कहलाती है अर्थात भाषा वह साधन है जिसके द्वारा हम अपने विचारों को व्यक्त कर सकते हैं और इसके लिए हम वाचिक ध्वनियों का प्रयोग करते हैं। अपने विचारों को व्यक्त करने के

Copyright © 2020Authors

साथ-साथ भाषा की अन्य उपयोगिताएं भी विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न रूपों में देखने को मिल रही हैं जिस मामले में हिंदी भाषा शीर्षस्थ है और जिस चीज की उपयोगिता होती है उसका प्रसार निश्चित ही होता है| यह दोनों एक दूसरे पर अन्योन्याश्रित समझे जा सकते हैं और अब हम आपको हिंदी भाषा के इसी उपयोगिता और प्रसार के विभिन्न पहलुओं को बताएंगे जो निम्न है-

१. इंटरनेट के क्षेत्र में हिंदी भाषा की उपयोगिता और प्रसार-

हिंदी भाषा को जानने समझने और बोलने वालों की अत्यधिक संख्या को देखते हुए विश्वभर की व्यवसाईटें हिंदी भाषा को स्थान दे रही हैं-उदाहरण के लिए ईमेल, ई-कॉमर्स, ई-बुक, इंटरनेट एस.एम.एस. आदि पर वेब जगत में हिंदी को बड़ी सहजता से पाया जा सकता है। **माइक्रोसॉफ्ट,गूगल,आईबीएम** तथा **ओरेकल** जैसी कंपनियां अत्यंत व्यापक बाजार और भारी मुनाफे को देखते हुए हिंदी भाषा के प्रयोग को बढ़ावा दे रही है और हिंदी भाषा की व्यापक उपयोगिता को समझते हुए अपने पोर्टल पर इसे व्यापक स्थान दे रही है जिससे हिंदी भाषा की उपयोगिता और वर्चस्वी प्रसार का प्रत्यक्ष प्रमाण देखा जा सकता है।

इंटरनेट के क्षेत्र में एक समय ऐसा था जब यह माना जाता था कि कंप्यूटर और इंटरनेट केवल अंग्रेजी भाषीओं के लिए है लेकिन हिंदी भाषा की इतनी अधिक मांग है कि अब हर जगह इंटरनेट पर हिंदी भाषा के रूप में कुछ भी सर्च किया जा सकता है और कोई भी जानकारी हिंदी में प्राप्त किया जा सकता है। हिंदी भाषा इतनी अधिक प्रसिद्ध और लोक समुदाय को जुड़े हुए हैं कि इंटरनेट पर कोई भी सोशल नेटवर्क वेबसाइट बिना हिंदी को अपनाएं अपनी पूर्ण तरक्की नहीं समझती है, जिसका जीता जागता उदाहरण फेस बुक है और यहां तक कि गूगल खुद भी ऑनलाइन हिंदी टाइपिंग के लिए

 Copyright © 2020Authors

ISSN 2454-2695
Vol 5 Issue 11 November 2019

गूगल हिंदी टाइपिंग टूल जो हिंदी को टाइप करने के लिए एक सरल माध्यम है को प्रदान करता है और यह सब हिंदी के गुणात्मक प्रभाव के कारण ही संभव हो पाया है।

हाल ही में देखा गया है कि ट्विटर के जैसा एक मूषक नाम का सोशल नेटवर्किंग वेबसाइट हिंदी भाषी लोगों के लिए पुणे के अनुराग गौड़ और उनके साथियों के द्वारा तैयार किया गया है इसमें ट्विटर की 140 शब्दों की सीमा की अपेक्षा शब्द सीमा 500है तथा इसे इंटरनेट पर **डब्ल्यू डब्ल्यू डब्ल्यू डॉट मूषक डॉट इन** पर खोला जा सकता है साथ ही गूगल प्लेस्टोर से भी डाउनलोड किया जा सकता है इसमें किसी भी हिंदी शब्द को रोमन में लिखने पर उसका हिंदी विकल्प नीचे आ जाता है और उसे चुनकर आसानी से हिंदी लिखा जा सकता है इस तरह की हिंदी वेबपोर्टल का बाजार में आना हिंदी भाषा की उपयोगिता और वर्चस्वी प्रसार का प्रत्यक्ष द्योतक है।

२. वैश्विकसमाजमेंहिंदीभाषाकीउपयोगिताऔरप्रसार-

विदेश में 25 से अधिक पत्रपत्रिकाएं नियमित रूप से हिंदी भाषा में प्रकाशित हो रही है| यू ए ई के 'हम एफ-एम' सहित अनेक देश हिंदी भाषा में कार्यक्रम प्रसारित कर रहे हैं जिनमें बीबीसी, जर्मनी के डायचेवेले, जापान के एनएच के वर्ल्ड और चीन के चाइनारेडियोइंटरनेशनल की हिंदी सेवा विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

फिजी, गुयाना, मारीशस, सूरीनाम, त्रिनिदाद, टोबैगो एवं **संयुक्त अरब अमीरात** के साथ-साथ अन्य देशों के करीब 115 शिक्षण संस्थानों में भारत को बेहतर ढंग से जानने व समझने के लिए हिंदी भाषा का अध्ययन अध्यापन होता है। कुछ प्रमुख उदाहरण स्वरूप- अमेरिका के 32 विश्वविद्यालयों और शिक्षा संस्थानों में हिंदी पढ़ाई जा रही है तथा **ब्रिटेन की**

Copyright © 2020Authors

लंदन यूनिवर्सिटी, कैंब्रिज और यॉर्क यूनिवर्सिटी में भी हिंदी भाषा की पढ़ाई लिखाई का कार्य संपादित किया जा रहा है। इसके साथ-साथ जर्मनी की बात करें तो जर्मनी के 15 शिक्षण संस्थानों में हिंदी भाषा और साहित्य के अध्ययन को अपनाया है तथा यहां के कई संगठन हिंदी भाषा का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं। चीन में 1942 में हिंदी का अध्ययन शुरू हो गया था तथा 1957 में हिंदी रचनाओं का चीनी भाषा में अनुवाद का कार्य आरंभ हो गया था। दुनिया में एकमात्र हिंदी ही एक ऐसी भाषा है जो कि सबसे अधिक और तेजी से प्रसारित होने वाली भाषाओं में से एक है| हिंदी भाषा के बोले जाने में लगभग 94% की दर से वृद्धि हो रही है। वैश्विक स्तर की यें घटनाएं हिंदी भाषा की उपयोगिता और वर्चस्वी प्रभाव को सिद्ध करने के लिए पर्याप्त है।

३. विज्ञापनों के क्षेत्र में हिंदी भाषा की उपयोगिता और प्रसार-

आज के समय में बहुराष्ट्रीय कंपनियों की उत्पादों के विज्ञापनों में ज्यादातर हिंदी नजर आती है| भारत विश्व के लिए एक बड़ा बाजार है तथा यह बाजार हिंदी भाषियों से प्रभावित है यहां पर अपार पैसा है और अगर पैसा कमाना है तो यहां की भाषा में बात करनी होगी तभी ग्राहकों को अपने उत्पाद के बारे में समझाया व उनकी ओर आकर्षित किया जा सकेगा| इस चीज को लगभग सभी व्यापारी बखूबी समझते और अपनाते हैं| बहुराष्ट्रीय कंपनियों के बड़े बड़े अधिकारी भी अब हिंदी सीख रहे हैं ताकि उन्हें मालूम पड़े कि भारतीय जनता किस तरह से सोचती और किस प्रकार के उत्पादों को चाहती है| वे भली-भांति जानते हैं कि भारत एक प्रमुख बाजार है और अगर यहां टिके रहना है तो यहां की भाषा को सीखकर ही आगे बढ़ा जा सकता है। आज आपको सड़कों पर चलते हुए या बाजारों में घूमते हुए जितने भी विज्ञापनों के बैनर पोस्टर दिखते हैं उनमें हिंदी भाषी पोस्टरों की प्रचुरता को स्पष्टतया देखा जा सकता

Copyright © 2020Authors

ISSN 2454-2695
Vol 5 Issue 11 November 2019

है। हिंदी भाषा में बने विज्ञापन काफी लोकप्रिय होते हैं, उदाहरण के लिए **'यह दिल मांगे मोर' 'ठंडा मतलब कोका कोला'** जैसे हजारों विज्ञापनों को काफी लोकप्रियता मिली है तथा हिंदी के स्लोगन व पंचलाइनें विज्ञापन के क्षेत्र में काफी अहम भूमिका निभाती हैं उदाहरण के लिए **'पहले इस्तेमाल करें – फिर विश्वास करें', 'सस्ता नहीं – सबसे अच्छा', 'डर के आगे जीत है'** इत्यादि। बड़ी- बड़ी विज्ञापन बनाने वाली कंपनियां हिंदी भाषी व्यक्तियों और कामगारों को काम पर रख रही हैं उसका एक ही कारण है बाजार में हिंदीभाषी विज्ञापनों की भारी डिमांड और इस डिमांड का प्रमुख आधार है हिंदीभाषा की गुणवत्ता और पहुंच। विज्ञापन के क्षेत्र में इन तमाम हिंदीभाषी गतिविधियों को देखकर हिंदी भाषा की उपयोगिता और वर्चस्वी प्रसार का प्रत्यक्ष दर्शन होता है।

४. तकनीकी क्षेत्र में हिंदी भाषा की उपयोगिता और प्रसार-

एक शोध के मुताबिक हिंदी सामग्री की खपत करीब 94 फीसद तक बढ़ी है हर पांच में से एक व्यक्ति हिंदी में इंटरनेट प्रयोग करता है फेसबुक ट्विटर और व्हाट्स एप जैसे चर्चित तकनीकी माध्यमों में आपको हिंदी में लिखने की सुविधा दी जाती है जिसके लिए आप प्रतिष्ठित कंपनियों द्वारा बनाए गए साधनों का प्रयोग कर सकते हैं उदाहरण के लिए **गूगल हिंदी इनपुट टूल, लिपिक डॉट इन** जैसे अनेक सॉफ्टवेयर और स्मार्टफोन एप्लीकेशन मौजूद है तथा हिंदी अंग्रेजी अनुवाद भी व्यवस्थित और व्यापक तरीके से तकनीकी क्षेत्र में आज के समय में संभव है। मोबाइल से लेकर कंप्यूटर तक में हिंदी प्रयोग करने वालों की संख्या में लगातार वृद्धि हो रही है जिसे देखकर अनेकों तकनिकी कंपनियां अपने डिजिटल उत्पादों को हिंदी में भी बाजार में ला रही है तथा प्रमुख जानकारी प्रदान करने वाली कंपनियां जैसे कोरा इत्यादि प्रचुर

Copyright © 2020Authors

ISSN 2454-2695
Vol 5 Issue 11 November 2019

मात्रा में हिंदी भाषा के अनुवादकों को काम पर रख रही हैं जिससे हिंदी भाषा की उपयोगिता और इसके वर्चस्वी प्रसार को स्पष्टतया समझा जा सकता है।

५. कामकाज की भाषा के रूप में हिंदी भाषा की उपयोगिता और प्रसार-

कामकाज की भाषा के रूप में हिंदी बेहद कारगर सिद्ध होती है विभिन्न कार्यालयों और स्कूलों महाविद्यालयों में यह भाषा संप्रेषण की दृष्टि से काफी सुविधाजनक होने के कारण इसे कामकाज की भाषा के रूप में प्रचुरता से अपनाया जा रहा है। विभिन्न बहुराष्ट्रीय कंपनियां अब हिंदी भाषा में भी साक्षात्कार कर रही हैं तथा हिंदी भाषी कामगारों को भी प्रतिष्ठित नजर से देखा जा रहा है। हिंदी को जिस रूप में बोला जाता है उसी रूप में लिखा जाता है तथा यह भारत में सर्वाधिक बोले जाने वाली भाषा होने के कारण कामकाज के भाषा के रूप में भी प्रचुरता से अपनायी जा रही है।

६. संस्कृति और साहित्यिक भाषा के रूप में हिंदी भाषा की उपयोगिता और प्रसार-

हिंदी भाषा का साहित्य संसार बड़ा ही व्यापक और विविधताओं से भरा है। हिंदी भाषा की अनेक बोलियां और उपभाषाओं के कारण इसकी साहित्य क्षेत्र में प्रचुर मात्रा में वृद्धि देखी जा सकती है| हिंदी भाषी साहित्य आदिकाल से ही अपना अमिट छाप छोड़ते हुए आ रहा है तथा आजादी के समय से लेकर अब तक सामाजिक जागरण और सामाजिक कुरीतियों पर आघात करते हुए आ रहा है जो राष्ट्रजागरण में अहम भूमिका निभाता है। हिंदी हमारी सांस्कृतिक भाषा है। आज भी समारोहों में हिंदी भाषा में मंच संचालन देखा जा सकता है जो अन्य किसी भी भाषा से कई गुना बेहतर व सुबोध होता है। इन सभी गुणों से युक्त होने के कारण हिंदी भाषा की उपयोगिता और प्रसार को इस क्षेत्र में भली-भांति अनुभूत किया जा सकता है।

Copyright ⓒ 2020Authors

७. शिक्षा के क्षेत्र में हिंदी भाषा की उपयोगिता और प्रसार-

शिक्षा के क्षेत्र में हिंदी भाषा की अनिवार्यता परमावश्यक है। आज के समय में देश में अधिकांश कार्यालयों में हिंदीभाषा में कार्य होते हैं तथा रेलवे अनाउंसमेंट से लेकर तमाम सत्संग सामाजिक कार्यक्रम हिंदीभाषा में संपादित किए जाते हैं| भारत में अधिकांश लोग हिंदीभाषा बोलते हैं और हिंदीभाषा का सर्वांगीण विकास बहुत तेजी के साथ हो रहा है जिसके साथ साथ हिंदी भाषी लोगों की तथा हिंदीभाषा के विशेषज्ञों और अनुवादकों की मांग बढ़ती जा रही है जिसे देखते हुए हिंदीभाषा की अनिवार्यता को भारत समेत तमाम देश अपने पाठ्यक्रमों में सुनिश्चित कर रहे हैं| **भारत में शैक्षणिक नियमों में त्रिभाषा सूत्र अभी तक लागू है जिसमें हिंदीभाषा के पठन-पाठन पर विशेष ध्यान दिया गया है।** भारत के साथ-साथ अमेरिका ब्रिटेन और जर्मनी के प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थानों में हिंदीभाषा की पठन-पाठन पर जोर दिया जा रहा है| शैक्षणिक क्षेत्र की ये सभी गतिविधियां हिंदी भाषा की उपयोगिता और वर्चस्वी प्रसार का प्रमाण प्रस्तुत करती हैं।

८. मनोरंजन के क्षेत्र में हिंदी भाषा की उपयोगिता और प्रसार-

मनोरंजन के क्षेत्र में हिंदीभाषा की बात करें तो हिंदी फिल्में दशकों से दर्शकों को प्रभावित करती आ रही हैं| हिंदी का बाजार आज विदेशी अभिनेत्रियों को भी हिंदी सीखने पर विवश कर रहा है और इस क्षेत्र में हिंदी की ताकत का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि आज हिंदी फिल्में 50 से अधिक देशों में देखी जा रही है। **अमेजॉन-प्राइम तथा नेटफ्लिक्स जैसे मनोरंजन की सामग्री प्रस्तुत करने वाली वेबसाइटों पर भी हिंदी के फिल्म व वेबसीरीज प्रचुर मात्रा में परोसा जा रहा हैं** तथा हिंदी भाषी कलाकारों को मोटी रकम में कार्य के लिए आमंत्रित किया जाता है। इनके साथसाथ हिंदीभाषा में फिल्म

Copyright © 2020Authors

ISSN 2454-2695
Vol 5 Issue 11 November 2019

डायलॉग और कहानी लिखने वाले लेखकों की भी प्रचुरमात्रा में डिमांड है तथा यह लोग भी हिंदीभाषा के साथ अच्छी कमाई कर रहे हैं। मनोरंजन के क्षेत्र में लाइव शो को भी वर्तमान में अच्छी ऊंचाई मिल रही है| हिंदीभाषा में प्रचुरमात्रा में लाइव कॉमेडी शो किए जा रहे हैं तथा टीवी पर भी हिंदीभाषा के लाइव शो देखें जा सकते हैं। बहुचर्चित मशहूर और कामयाबी का नया **इतिहास रचने वाली चलचित्र 'अवतार' को हिंदी नाम दिया गया** जिसका अर्थ 'पृथ्वी में आना' है। हॉलीवुड की इस मशहूर फिल्म ने अपने समय में दुनिया में सबसे ज्यादा कमाई करने वाले चलचित्र का रिकॉर्ड बनाया।आज के समय में विभिन्न भाषाओं जैसे अंग्रेजी, बांग्ला, तमिल इत्यादि के फिल्मों और वेबसीरीज को हिंदीभाषा में रूपांतरित करके प्रस्तुत किया जा रहा है तथा अनेकों एनीमेटेड कार्यक्रमों (कार्टूनों) को हिंदी भाषा में रूपांतरित करके परोसा जा रहा है। पहले के समय में ऐसी धारणा थी की हिंदी लेखकों को बहुत कम पैसा मिलता है लेकिन अब यह धारणा भी टूट चुकी है क्योंकि हाल के ही वर्षों में हिंदी में बेहतर किताबें प्रकाशित हुई है और नए लेखक अच्छा पैसा कमा रहे हैं और इस बात को समझने के लिए अग्रलिखित दो उदहारण पर्याप्त है – एक प्रकाशक ने लेखक रत्नेश्वरसिंह को 1.75 करोड़ में अनुबंधित किया है तथा एक अन्य लेखक विजयशर्मा के पास कि इस प्रकार के प्रस्ताव आए हैं। मनोरंजन के क्षेत्र में यह सभी तमाम हिंदीभाषी घटनाएं हिंदी भाषा की उपयोगिता और वर्चस्वी प्रसार को चीखचीख कर प्रदर्शित कर रही है।

९. राष्ट्रीय एकता में हिंदीभाषा की उपयोगिता और प्रसार-

देश में फैली हुई अनेक भाषाओं और संस्कृतियों के बीच यदि भारतीय जीवन की उदारता एवं एक आत्मकता किसी एक भाषा में दिखाई देती है तो वह है

Copyright ⓒ 2020Authors

हिंदी भाषा| हिंदी जानते हो या नहीं लेकिन फिर भी इस के द्‌वारा अधिकांशजन अपना काम चलाने में समर्थ होते हैं और उन्हें इसमें कठिनाई नहीं होती। हिंदी भाषा मे कथित महापुरुषों के कथन व नारें हमें राष्ट्रीय एकता के प्रति जागरूक व प्रोत्साहित करते हैं उदाहरण के लिए- **हिंदी हैं हम वतन है हिंदुस्तान हमारा, सारे जहां से अच्छा हिंदुस्ता हमारा** इत्यादि। हिंदी भाषा में लिखे गए तमाम ऐतिहासिक घटनाएं वह कहानियां हमें राष्ट्रीय एकता के प्रति सचेत करती हैं और हमें एकजुट होकर जीने की प्रेरणा देती है। विभिन्न संगठनों के ध्येय वाक्य व उनके गान हमें राष्ट्रीय एकता की भावना से ओत प्रोत करते हैं, उदाहरण के लिए राष्ट्रीय कैडेट कोर के गान का यह वाक्य- **हम सब भारतीय हैं – अपनी मंजिल एक है हां हां हां – एक है हो हो हो एक है – हम सब भारतीय हैं।** हिंदी भाषा में सम्मिलित सभी राष्ट्रीय एकता की बोधक गतिविधियाँ राष्ट्रीय एकता में हिंदीभाषा की उपयोगिता और प्रसार के द्‌योतक है।

१०. मीडिया के क्षेत्र में हिंदी भाषा की उपयोगिता और प्रसार-

हिंदी भाषा मीडिया की भाषा बनती जा रही है। आजकल, विशुद्ध रूप से अंग्रेजी भाषा में प्रसारण करने वाले चैनलों को हिंदी में इंटरव्यू करते देखा जा सकता है, भले ही वे बाद में उसका रूपांतरण करते हैं। भारत की प्रमुख भाषा हिंदी है और हिंदी के प्रयोग के बिना यहां कोई भी स्थायी रूप से नहीं रह सकता। **बी.बी.सी. , वॉयस ऑफ अमेरिका, रेडियोपेइचिंग, डीडब्ल्यू आदि ने हिंदी में प्रसारण शुरू किए हैं तथा इकनॉमिक टाइम्स, बिजनेस स्टैंडर्ड तथा पायनियर जैसे अंग्रेजी समाचार पत्रों ने हिंदी में प्रकाशन प्रारंभ कर दिए हैं।** इन्हें अब आभास हो चुका है कि यदि व्यापक पहुंच बनानी है तो हिंदी भाषा से जुड़ना होगा। बड़े-बड़े समाचार पत्र घराने तो वर्षों से हिंदी अखबार चला हीरहे

Copyright © 2020Authors

हैं मसलन हिंदुस्तान टाइम्स ग्रुप का हिंदुस्तान, टाइम्स ऑफ इंडिया का नवभारतटाइम्स और इंडियनएक्सप्रेस का जनसत्ता पहले ही बाजार में जमे हु एहैं लेकिन **दैनिक जागरण और भास्कर तो हिंदी के दम पर ही टिके हैं और आज प्रसार के मामले में एक और दो नंबर की पोजीशन में है** इनका एक और दो नंबर का शीर्षस्थ स्थान हिंदी भाषा की उपयोगिता और प्रसार का प्रत्यक्ष प्रमाण उपस्थापित कर रहा है।

भारत में आज 200 से अधिक सामुदायिक रेडियो चल रहे हैं जिनमें अधिकतर हिंदी भाषी हैं। इनमें स्थानीय भाषाओं और बोलियों का मिश्रण होता है लेकिन इनके पढ़नेलिखने की भाषा हिंदी ही है। हरियाणा के रेडियो 'अल्फाज-ए-मेवात' को ही उदाहरण के रूप में लें तो यह शिक्षा के साथ-साथ हिंदी का प्रचार-प्रसार भी कर रहा है और अब नई तकनीक से लैस रेडियो 'अल्फाज-ए-मेवात' मोबाइल ऐप भी उपलब्ध है जिसके माध्यम से आप कभी भी कहीं भी इंटरनेट के द्वारा इसे सुन सकते हैं। ऐसा सिर्फ एक रेडियो, टीवी चैनल या अखबार ने किया हो ऐसा नहीं है। आज के समय में ज्यादातर हिन्दी भाषी टीवी चैनल, अखबार और रेडियो के मोबाइल ऐप उपलब्ध है जिसे आसानी से इंटरनेट के जरिए कहीं भी कभी भी देखा और सुना जा सकता है। मीडिया के इन सभी हिंदीभाषी गतिविधियों के द्वारा इस क्षेत्र में हिंदीभाषा के वर्चस्वी प्रसार और उपयोगिता को स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है।

निष्कर्ष-

"इस विशाल प्रदेश के हर भाग में शिक्षित-अशिक्षित, नागरिक और ग्रामीण सभी हिंदी को समझते हैं।" हिंदी यात्रा सहित्य के पितामह राहु ल सांकृत्यायन कि इस बात से हिंदी भाषा की उपयोगिता व प्रसार के महत्व को

 Copyright ⓒ 2020Authors

ISSN 2454-2695
Vol 5 Issue 11 November 2019

बखूबी समझा जा सकता है। हिंदी भारत की राजभाषा होने के साथ-साथ आत्मगौरव का केंद्र है जिसे अपनाकर हम राष्ट्रीय एकता के साथ-साथ बेरोजगारी जैसे कई बड़े विषयों से जनित समस्याओं से निदान पा सकते हैं और समाज में फैली अन्यान्य कुरीतियों से निपट सकते हैं। इस बात को कहते हुए मैं बालकृष्ण शर्मा का हिंदी के विषय में कहा गया वह कथन याद दिलाना चाहता हूं जिसमें बालकृष्णशर्मा ने कहा है की **"राष्ट्रीय एकता की कड़ी हिंदी ही जोड़ सकती है।"** सामाजिक कवि, दार्शनिक व लेखक वे लोग होते हैं जो इस समाज को अत्यंत समीप से देखते हैं और इसके समस्याओं और निदान पाने के कारणों को वर्षों के अपने अनुभव और चिंतन से समझ रहे होते हैं। हिंदी भाषा के सद्गुणों और विशेषताओं को लेकर अनेकों महापुरुषों के कथन देखे जा सकते हैं ये सभी एक ही बात समझाना चाहते हैं कि **"निजभाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल"** अर्थात् अपनी भाषा की उन्नति के बिना किसी भी समाज की उन्नति संभव नहीं है अतः हमें उत्तरोत्तर वृद्धि करती हुई हमारी हिंदीभाषा की उपयोगिता को समझते हुए इसे सहृदयता से अपनाना चाहिए। आज के समय में हिंदी को पूरा विश्व सहृदयता से अपना रहा है वही अपने ही देश के कुछ चंद लोग इसे स्वीकारने से मना कर रहे हैं इसके पीछे उनका अपना निजी स्वार्थ हो सकता है जो व्यापक हित के सामने इस विश्वरूपी ब्रह्मांड में एक तारे के समान भी नहीं है। ऐसे लोग जो हिंदी बोलने पर शर्म महसूस करते हैं और इसे स्वीकारने से मना करते हैं उन्हें यह समझना चाहिए कि वें अपने आपको इस व्यापक हिंदीभाषी समुदाय से अलग-थलग कर रहे हैं, वे अपने आपको इस बृहद बाजार से अलग-थलग कर रहे हैं और वें अपने आपको इस हिंदी भाषारूपी अमृत के भंडार से अलग-थलग कर रहे हैं और **जिस प्रकार अमृत को त्यागकर कोई भी अपना अमरत्व खतरे में डाल रहा होता है उसी प्रकार ये**

Copyright © 2020Authors

लोग अपने आपको हिंदीभाषा से अलग करके हिंदी भाषा के व्यापक फायदों से अपने आपको अलग कर रहे हैं। आज के समय में तकनीक, मनोरंजन, विज्ञापन, शिक्षा या कोई भी क्षेत्र हो हर क्षेत्र में हिंदी भाषा को प्रचुरता से अपनाया जा रहा है और हिंदी भाषा का भविष्य और भी सुनहरा दिखाई पड़ता है तबके समय में हमें निःसंदेह अपनी राजभाषा पर गर्व करना चाहिए और स्वयं इसे सीखना और अपने आने वाली पीढ़ी को सीखने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

सन्दर्भ-

(विकिपीडिया, n.d.)

(हिंदीसाहित्यदर्पण, n.d.)

(जागरण, n.d.)

(प्रभासाक्षी, 2017)

(हिंदीकुंज, n.d.)

(अखंडभारतविश्वगुरु, n.d.)

(TET SUCCESS KEY, 2015)

 Copyright © 2020Authors